MY SURPRISE

Ferdinando Frega – Nando the Scribe



Gillettenarrative.com

जिलेट: मेरा अचरज

फ़्रेम

मैं अभी-अभी उस क्लिनिक पहुँचा था जहाँ मेरी बेटी अपनी मोटर रिहैबिलिटेशन करती है, उन पलों में से एक जो आप कभी किसी और को नहीं सौंपते, वहाँ होने का मतलब है समस्या के भीतर होना, न कि बेसबॉल के मैच का दर्शक होना।

मैं उस जगह बैठ गया था जो मुझ जैसों के लिए रखी गई है, एक छोटी मेज़, एक अकेली कुर्सी के साथ, सबसे दूर पर उनकी नज़रों से नहीं।

ठीक जब मुझे लगा कि मोर्चा पक्का हो गया, पास की एक मेज़ से, अपनी दोपहर की झपकी और सिगरेट के बीच बैठे मरीज़ों ने मुझे साथ देने को बुला लिया, और यह जताने में उन्होंने कोई झिझक नहीं दिखाई कि मेरी मौजूदगी उन्हें भाती है।

उनमें से सिर्फ़ एक जानता था कि मैं लिखता हूँ, और जब हम अकेले होते तो वह मुझे मिस्टर जिलेट कहकर बुलाता, एक चौड़ी, तृप्त मुस्कान ख़र्च करते हुए, जबकि मैं उसे इसके लिए डाँटता, इससे ज़्यादा कुछ कर नहीं पाता था।

हम एक ऐसी धरती पर थे, कालाब्रिया, जहाँ मेरा अपहरण हो सकता था, 60 से 90 के दशकों के बीच फिरौती के सबसे बड़े और सबसे मुनाफ़े वाले अपहरणों की मातृभूमि, आठ अंकों की रक़में। यहाँ किसी को भगाकर नहीं ले जाया जाता था, वह दूसरे इलाक़ों की बात थी, दूसरी धरतियों की, दूसरी संस्कृतियों की, जहाँ प्यार शब्द वजह बताने और सही ठहराने के काम आता था, और बाद में माफ़ी पाने के, क्योंकि यहाँ कोई पहले रज़ामंदी हुए बिना नहीं निकलता था, हम सिनसिनाटी में नहीं थे।

वहाँ 65 साल के एक प्रोफ़ेसर थे और 34 साल के एक शिक्षक, दोनों विकलांग, दोनों व्हीलचेयर पर, आपस में ज्यामिति और प्राचीन भाषाओं पर उस भरोसे से बहस करते हुए जो उम्र भर पढ़ाने वालों में होता है। मैं सुनने वाला बना रहा, बिना टिकट का दर्शक।

जब वे निपट गए, तो दोनों मेरी ओर मुड़े और बोले: माफ़ कीजिए, पर आप करते क्या हैं?

और मैंने, मुस्कुराते हुए, जवाब दिया: मैं वे किताबें लिखता हूँ जिनसे आप जैसे प्रोफ़ेसर सीखते हैं, और मैं दिल से उम्मीद करता हूँ कि आप अच्छे शिक्षक बन पाएँ।

वे चुप हो गए, पर जाते-जाते मैंने कहा: अरे, मैं तो भूल ही चला था।

बिलकुल मुकम्मल ज्यामितीय आकृति वर्ग नहीं है, जैसा कहने तक आप दोनों गिर गए, बल्कि त्रिभुज है, मानो दो या ज़्यादा त्रिभुजों का जोड़ एक वर्ग बना देता हो, और किसी पाइथागोरस ने कुछ प्रमेय भी खड़े किए थे, हालाँकि मुझे याद नहीं उसने कितने छपवाए, बस इतना जानता हूँ कि काफ़ी बना डाले।

और एक बात, वह भाषाई बुनियाद जिसने इंसानियत को आगे बढ़ने दिया, वह लैटिन नहीं है, जैसा आपने बेवक़ूफ़ी से दावा किया, उन बेचारे मूर्खों के पास सिर्फ़ 2,000 शब्द थे, और फिर यूनानी आए, जो 8,000 लाए, और जिन्होंने दर्शन को जन्म दिया, वही जो हमें यह सोचने देता है कि एक दिन हम बेहतर होंगे।

और ज़रा सोचिए कि वर्णमाला का अक्षर “J” इतालवी है ही नहीं, फिर भी वह हमेशा कितनी ही पहचानों की बुनियाद रहा है। बस जावे को सोचिए, फिर जीसस को, फिर जिलेट की सीईओ जुलियाना को, फिर पी एंड जी के प्रेसिडेंट जेजुरीकर को, और फिर सोचिए कि मेरा नाम फ्रेगा है, F से, क्योंकि J मेरे लिए कहीं ज़्यादा भारी पड़ता, एक ऐसा अचरज जिसकी मुझे कभी आदत न पड़ती।

फर्दिनांदो